

रामलाल कपूर ट्रस्ट

का

संक्षिप्त परिचय

तथा उसके द्वारा

प्रकाशित वा प्रसारित प्रामाणिक ग्रन्थ

[१ अप्रेल १९८८ का नया प्रामाणिक सूची-पत्र]

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान—

रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ [सोनीपत-हरयाणा]

रामलाल कपूर एण्ड संस पेपर मर्चेण्ट्स

गुरु बाजार अमृतसर] [२५९६, नई सड़क, देहली

साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ-२

रामलाल कपूर ट्रस्ट का संक्षिप्त परिचय

स्थापना – २६ फरवरी १९२८ को माननीय श्री रामलाल जी कपूर (अमृतसर) के स्वर्गवास के पश्चात् उनके सुपुत्रों सर्वश्री **रूपलाल जी कपूर हंसराज जी कपूर, ज्ञानचन्द जी कपूर** तथा **प्यारेलाल जी कपूर** ने अपने स्वर्गीय पिता जी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिये यह धर्मार्थ ट्रस्ट स्वर्गीय श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के सहयोग से स्थापित किया।

ट्रस्ट के उद्देश्य—प्राचीन वैदिक साहित्य का अन्वेषण, रक्षा तथा प्रचार, एवं भारतीय संस्कृति, भारतीय शिक्षा, भारतीय विज्ञान और चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा।

ट्रस्ट के प्रधान और मन्त्री—प्रथम प्रधान स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी रहे। उनके बाद स्व० श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, स्व० श्री पं० भगवद्दत्त जी रिसर्चस्कालर, स्व० श्री वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री रहे। अब श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक प्रधान हैं। आद्य मन्त्री स्व० श्री रूपलाल जी कपूर थे। उनके पश्चात् स्व० श्री बा० हंसराज जी कपूर रहे। अब श्री बा० प्यारेलाल जी कपूर हैं।

ट्रस्ट का कार्य—ट्रस्ट की ओर से इस समय निम्न कार्य हो रहे हैं—

१. वैदिक वाङ्मय का अनुसन्धान वा प्रकाशन।

२. पाणिनि-महाविद्यालय—(आर्षपाठ-विधि के अनुसार)।

३. बृहत् पुस्तकालय—वेद और व्याकरणादि विषयों में शोध-कार्य के लिये उपयोगी अत्यन्त दुर्लभ मुद्रित तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह।

४. वेदवाणी (मासिक-पत्रिका) का प्रकाशन।

५. प्रेस - सब प्रकार के वैदिक सस्वर ग्रन्थ छापने योग्य।

अनुसंधान व प्रकाशन कार्य के रूप में ट्रस्ट की ओर से अब तक वेद कर्मकाण्ड, अध्यात्म, व्याकरण, निरुक्त, इतिहास, राजनीति आदि विविध विषयों के लगभग ९० ग्रन्थ छप चुके हैं। ट्रस्ट ने ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थों के भी शुद्ध सुन्दर शोधपूर्ण विशिष्ट संस्करण प्रकाशित किये हैं।

रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा

प्रकाशित वा प्रसारित प्रामाणिक ग्रन्थ

वेद-विषयक ग्रन्थ

१. ऋग्वेदभाष्य (संस्कृत हिन्दी; प्रथम भाग ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित)—प्रति भाग सहस्राधिक टिप्पणियां, १०-११ प्रकार के परिशिष्ट व सूचियां दी गई हैं। अत्यन्त शुद्ध संस्करण बढ़िया कागज और सुन्दर छपाई युक्त। प्रथम भाग ४०-००, द्वितीय भाग ३५-००, तृतीय भाग ४०-००।

२. यजुर्वेदभाष्य-विवरण—ऋषि दयानन्द कृत भाष्य पर पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत विवरण। इस में ऋषि दयानन्द के भाष्य का शुद्ध पाठ और उसकी पुष्टि में प्रति मन्त्र प्रमाण दिये गये हैं। मन्त्र के पदों की सस्वर व्याकरण प्रक्रिया लिखी गई है। प्रथम भाग ११०-००, द्वितीय भाग ५०-००।

३. तैत्तिरीय-संहिता—मूलमात्र, मन्त्र-सूची सहित। ५०-००

४. तैत्तिरीय-संहिता-पदपाठः—५० वर्ष से दुर्लभ ग्रन्थ का पुनः प्रकाशन, बढ़िया सुन्दर जिल्द १००-००।

५. अथर्ववेदभाष्य श्री पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय कृत। ७-८ काण्ड ४०-००; ९-१० काण्ड ४०-००; ११-१३ काण्ड ३५-००; १४-१७ काण्ड ३०-००; १८-१९ काण्ड २५-००; बीसवां काण्ड २५-००।

६. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका—पं० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा सम्पादित एवं शतशः टिप्पणियों से युक्त। साधारण जिल्द ३०-००, पूरे कपड़े की ३५-००।

७. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-परिशिष्ट—भूमिका पर किए गये आक्षेपों के ग्रन्थकार द्वारा दिये उत्तर। मूल्य ४-००

८. माध्यन्दिन (यजुर्वेद) पदपाठ—शुद्ध संस्करण। ४०-००

९. गोपथ-ब्राह्मण (मूल)—सम्पादक श्री डा० विजयपाल जी विद्या-वारिधि। अब तक प्रकाशित सभी संस्करणों से अधिक शुद्ध और सुन्दर संस्करण। मूल्य ५०-००

१०. **वैदिक-सिद्धान्त-मीमांसा**—पं० युधिष्ठिर मीमांसक लिखित वेद-विषयक १७ विशिष्ट निबन्धों का अपूर्व संग्रह। अप्राप्य

११. **कात्यायनीय ऋक्सर्वानुक्रमणी (ऋग्वेदीया)**—षड्गुरुशिष्य विरचित संस्कृत टीका सहित। इसमें ऋग्वेद के प्रतिमन्त्र ऋषि देवता और छन्दों का संकलन है। इस संस्करण में टीका का पूरा पाठ प्रथम वार छापा गया है। विस्तृत भूमिका और अनेक परिशिष्टों से युक्त। १००-००

१२. **ऋग्वेदानुक्रमणी**—वेङ्कटमाधवकृत। इस ग्रन्थ में स्वर छन्द आदि आठ वैदिक विषयों पर गम्भीर विचार किया गया है। प्रत्येक वेदार्थ के जिज्ञासु के लिये यह ग्रन्थ परम उपयोगी है। व्याख्याकार—श्री डा० विजयपाल जी विद्यावारिधि। उत्तम संस्करण ३५-००; साधारण २५-००

१३. **वैदिक-साहित्य-सौदामिनी**—स्व० श्री पं० वागीश्वर वेदालंकार। काव्यप्रकाश साहित्यदर्पण आदि साहित्यिक ग्रन्थों के समान वैदिक साहित्य पर शास्त्रीय विवेचनात्मक ग्रन्थ। साधारण जिल्द ४५-००, बढ़िया जिल्द ५०-००।

१४. **ऋग्वेद की ऋक्संख्या**—(संस्कृत-हिन्दी)। इसमें ऋग्वेद की विविध विद्वानों द्वारा दर्शाई गई मन्त्रसंख्या की समालोचना और शुद्ध वास्तविक मन्त्रसंख्या दर्शाई है। युधिष्ठिर मीमांसक मूल्य ५-००

१५. **वेद-श्रुति-आम्नाय-संज्ञा-मीमांसा**—(संस्कृत-हिन्दी) इसमें सप्रमाण दर्शाया गया है कि मन्त्रों की ही वेदसंज्ञा है। ब्राह्मणग्रन्थों की वेद श्रुति आम्नाय संज्ञा पारिभाषिक केवल यज्ञीय प्रकरण तक ही सीमित है। मूल्य २-५०

१६. **वैदिक-छन्दोमीमांसा**—वैदिक छन्दःशास्त्र सम्बन्धी पांच प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर प्रत्येक छन्द के भेद-प्रभेद और उदाहरण दिये हैं। यु० मी०। नया संस्करण २५-००

१७. **वैदिक-स्वर-मीमांसा**—वेद में प्रयुक्त उदात्तादि स्वरों का विस्तृत विवेचन किया गया है। स्वर-शास्त्र के अज्ञान के कारण होने वाली भूलों का निदर्शन एवं स्वर-भेद से होने वाले अर्थ-भेद को दर्शाया है। युधिष्ठिर मीमांसक ३०-००

१८. **वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त विविध स्वराङ्कन-प्रकार**—यु० मी०। ६-००

१९. वेदों का महत्त्व तथा उनके प्रचार के उपाय; वेदार्थ की विविध प्रक्रियाओं की ऐतिहासिक मीमांसा (संस्कृत-हिन्दी)—यु० मी०। ६-००

२०. देवापि और शन्तनु के आख्यान का वास्तविक स्वरूप—लेखक—श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु। मूल्य २-५०

२१. वेद और निरुक्त—श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। २-५०

२२. निरुक्तकार और वेद में इतिहास—,, ,, २-५०

२३. त्वाष्ट्री सरण्यू की वैदिक कथा का वास्तविक स्वरूप—लेखक—श्री पं० धर्मदेव जी निरुक्ताचार्य। मूल्य २-५०

२४. वैदिक-जीवन-श्री विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड द्वारा अथर्ववेद के आधार पर वैदिक-जीवन के सम्बन्ध में लिखा गया अत्यन्त उपयोगी स्वाध्याय-योग्य ग्रन्थ। अजिल्द १२-००, सजिल्द १६-००।

२५. वैदिक-गृहस्थाश्रम—श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड द्वारा अथर्ववेद के आधार पर लिखित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। अजिल्द २६-००; सजिल्द ३०-००।

२६. शिवशङ्करीय-लघुग्रन्थ पञ्चक—इसमें श्री पं० शिवशङ्कर जी काव्यतीर्थ लिखित वेदविषयक **चतुर्दश-भुवन, वसिष्ठ-नन्दिनी, वैदिक विज्ञान, वैदिक-सिद्धान्त और ईश्वरीय पुस्तक कौन?** नाम के पांच विशिष्ट निवन्ध छापे गये हैं। ये वहुत वर्षों से अप्राप्य थे। मूल्य ८-००

२७. यजुर्वेद का स्वाध्याय तथा पशुयज्ञ-समीक्षा—ले० पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय। वढ़िया जिल्द २५-००, साधारण २०-००।

२८. शतपथब्राह्मणस्थ अग्निचयन-समीक्षा—लेखक—पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय। मूल्य ४५-००

२९. ऋग्वेदपरिचय—श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड। ऋग्वेद का परिचयात्मक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। अजिल्द १२-००; सजिल्द १६-००।

३०. वैदिक-पीयूष-धारा—लेखक—श्री देवेन्द्रकुमार जी कपूर। चुने हुए ५० मन्त्रों की प्रतिमन्त्र पदार्थपूर्वक विस्तृत व्याख्या, अन्त में भावपूर्ण गीतों से युक्त। उत्तम जिल्द १५-००; साधारण १०-००।

३१. क्या वेद में आर्यों और आदिवासियों के युद्धों का वर्णन है? लेखक—श्री वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री। मूल्य १२-००

३२. उरु-ज्योति—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल लिखित वेदविषयक स्वाध्याय योग्य निबन्धों का संग्रह। सुन्दर छपाई। पक्की जिल्द १८-००।

३३. **वेदों की प्रामाणिकता**—डा० श्रीनिवास शास्त्री। १-५०

३४. **ANTHOLOGY OF VEDIC HYMNS**—Swami Bhumananda Sarasvati. 60-00

कर्मकाण्ड-विषयक ग्रन्थ

३५. **बौधायन-श्रौत-सूत्रम्**—(दर्शपूर्णमास प्रकरण)—भवस्वामी तथा सायणकृत भाष्य सहित (संस्कृत)। ४०-००

बौधायन-श्रौत-सूत्रम्—(आधान-प्रकरण)—सुबोधिनी वृत्ति और आधान प्रक्रिया सहित (संस्कृत) ४०-००

३६. **दर्शपूर्णमास-पद्धति**—दर्शपौर्णमास समस्त श्रौतयज्ञों की प्रकृति रूप हैं। इसके परिज्ञान से अन्य यज्ञों की प्रक्रिया जानने में सहायता मिलती है। पं० भीमसेन कृत, भाषार्थ सहित। २५-००

३७. **कात्यायनगृह्यसूत्रम्**—(मूलमात्र) अनेक हस्तलेखों के आधार पर हमने इसे प्रथम बार छापा है। २५-००

३८. **श्रौतपदार्थ-निर्वचनम्**—(संस्कृत) अग्न्याधान से अग्निष्टोम पर्यन्त अध्वर्यु ऋत्विक् सम्बन्धी यज्ञ में क्रियमाण सभी पदार्थों का विवरणात्मक ग्रन्थ। सजिल्द ४०-००

३९. **श्रौत-यज्ञ-मीमांसा**—(संस्कृत-हिन्दी) लेखक—युधिष्ठिर मीमांसक। इस में श्रौत यज्ञों भी उत्पत्ति, प्रयोजन, उन में परिवर्तन तथा पशुयज्ञों पर विस्तार से विवेचना की है। मूल्य ३०-००

४०. **संस्कार-विधि**—अत्यन्त शुद्ध शताब्दी संस्करण, ४६० पृष्ठ, सहस्राधिक टिप्पणियां, १२ परिशिष्ट। मूल्य लागतमात्र १५-००, राज-संस्करण २०-००। सस्ता संस्करण ९-००, अच्छा कागज सजिल्द १०-००।

४१. **वेदोक्त-संस्कार-प्रकाश**—पं० बालाजी विट्ठल गांवस्कर द्वारा मूल मराठी में लिखे गये ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद। इसी का गुजराती अनुवाद संशोधित संस्कार-विधि का आधार बना। २०-००

४२. **अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त श्रौत-यज्ञों का संक्षिप्त परिचय**—इस ग्रन्थ में अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, सुपर्णचिति सहित सोमयाग, चातुर्मास्य और वाजपेय आदि यागों का वर्णन है। (दोनों भाग एकत्र)। लेखक—यु० मी०, डा० विजयपाल। मूल्य १२-००

४३. संस्कार-विधि-मण्डनम् – संस्कार-विधि की व्याख्या। लेखक—वद्य श्री रामगोपाल जी शास्त्री। अजिल्द १२-००; सजिल्द १६-००

४४. वैदिक-नित्यकर्म-विधि – सन्ध्यादि पांचों महायज्ञ तथा बृहद् हवन के मन्त्रों की पदार्थ तथा भावार्थ व्याख्या सहित। यु० मी० मूल्य ६-००, सजिल्द ८-००

४५. वैदिक-नित्यकर्म-विधि—(मूलमात्र) सन्ध्या तथा स्वस्तिवाचनादि बृहद् हवन के मन्त्रों सहित। मूल्य १-००

४६. पञ्चमहायज्ञविधि – ऋ० द० कृत संस्कृत और हिन्दी भाष्य सहित। शुद्ध संस्करण। मूल्य ३-००

४७. पञ्चमहायज्ञ-प्रदीप—श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत पांच महायज्ञों की व्याख्या। ५-००

४८. हवनमन्त्र—स्वस्तिवाचनादि सहित। ०-६०

४९. सन्ध्योपासनविधि—भाषार्थ सहित। अप्राप्य

५०. सन्ध्योपासनविधि—भाषार्थ तथा दैनिक यज्ञ सहित। अप्राप्य

शिक्षा-निरुक्त-व्याकरण-ज्योतिष-छन्दःशास्त्र विषयक ग्रन्थ

५१. वर्णोच्चारण-शिक्षा ऋषि दयानन्द कृत हिन्दी व्याख्या। इसमें प्रत्येक वर्ण के शुद्ध उच्चारण के लिये स्थान और प्रयत्नादि का विधान है। [अगले शिक्षा ग्रन्थों में भी यही विषय है]। ०-७५

५२. शिक्षासूत्राणि—आपिशल-पाणिनीय-चान्द्रशिक्षा-सूत्र। मू० ७-००

५३. शिक्षाशास्त्रम् – (संस्कृत) जगदीशाचार्य। १०-००

५४. अरबी शिक्षाशास्त्रम् (संस्कृत) जगदीशाचार्य। १०-००

५५. शिक्षा-महाभाष्यम् (संस्कृत) जगदीशाचार्य विरचित। मूल्य १२-००; सजिल्द १५-००।

५६. वृद्धशिक्षा-शास्त्रम्—,, ,, ,, । २५-००; सजिल्द ३०-००

५७. हमारी वर्णमाला—(हिन्दी) ,, ,, ५-००

५८. निरुक्त-भाष्य—श्री पं० भगवद्दत्तकृत नैरुक्त=आधिदैविक प्रक्रियानुसारी तथा पाश्चात्यमत खण्डन सहित। अप्राप्य

५९. निरुक्त-श्लोकवार्त्तिकम् – केरलदेशीय नीलकण्ठ गार्ग्य विरचित। एक मात्र मलयालम लिपि में ताडपत्र पर लिखित अत्यन्त दुर्लभ प्रति के

आधार पर मुद्रित । आरम्भ में उपोद्घात रूप में निरुक्त-शास्त्र विषयक संक्षिप्त,ऐतिह्य दिया गया है (संस्कृत) सम्पादक—डॉ० विजयपाल विद्या-वारिधि । उत्तम कागज, शुद्ध छपाई तथा सुन्दर जिल्द सहित । १२५-००

६०. निरुक्त-समुच्चय—आचार्य वररुचि विरचित (संस्कृत) । इस में चार कल्पों में १०० मन्त्रों की नैरुक्तप्रक्रियानुसार व्याख्या की गई है। सम्पादक—युधिष्ठिर मीमांसक । मूल्य २०-००

६१. अष्टाध्यायी—(मूल) शुद्ध संस्करण । ४-००

६२. अष्टाध्यायी-परिशिष्ट—सूत्रों के पाठ-भेद, सूत्र-सूची अप्राप्य

६३. अष्टाध्यायी-भाष्य—(संस्कृत तथा हिन्दी)—श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत । इस के संस्कृत भाग में प्रत्येक सूत्र का पदच्छेद, विभक्ति, समास और ऊपर से आने वाली अनुवृत्ति का निर्देश करके सरल संस्कृत में सूत्र की वृत्ति और उदाहरण दिये हैं । प्रत्येक भाग के अन्त में उदाहरणों की सिद्धि की प्रक्रिया दर्शाई है। भाग –I ५०-००, भाग—II ३०-००, भाग—III ३५-००

६४. धातुपाठ – धात्वादिसूची सहित, शुद्ध संस्करण । ३-५०

६५. क्षीरतरङ्गिणी—क्षीरस्वामीकृत । पाणिनीय धातुपाठ की सब से प्राचीन एवं प्रामाणिक व्याख्या । सजिल्द ६०-०० ।

६६. धातुप्रदीप—मैत्रेयरक्षित विरचित पाणिनीय धातुपाठ की प्राचीन व्याख्या । सजिल्द ४०-०० ।

६७. वामनीयं लिङ्गानुशासनम्—वामनकृत-स्वोपज्ञव्याख्यासहितम् । इस में केवल पद्यों में संस्कृत भाषा के शब्दों का लिङ्ग बताया है । व्याख्या पाणिनीय व्याकरणानुसार है । १०-००

६८. संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि—लेखक—पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु । इस ग्रन्थ की सरलता का अनुभव करके इसके आधार पर उत्तरप्रदेश तथा अन्य प्रदेशों के नगरों में प्रतिवर्ष अनेक शिविरों का आयोजन किया जाता है। पहला भाग १५-००; दूसरा भाग २५-०० ।

६९. The Tested Easiest Method of Learning and Teaching Sanskrit (First Book)—यह पुस्तक श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु कृत '**विना रटे संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि**' भाग १ का अंग्रेजी अनुवाद है । अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पाणिनीय व्याकरण में प्रवेश वरने वालों के लिये यह आधिकारिक पुस्तक है । कागज और छपाई सुन्दर, सजिल्द २५-०० ।

७०. **महाभाष्य** —हिन्दी व्याख्या—(द्वितीय अध्याय पर्यन्त) यु० मी० भाग—I ६०-००; भाग—II ५०-००; भाग—III ३०-०० ।

७१. **उणादिकोष**—पञ्चपादी उणादि सूत्रों की ऋ० द० स० कृत व्याख्या तथा पं० युधिष्ठिर मीमांसक कृत टिप्पणियों, एवं ११ सूचियों सहित । अजिल्द १५-०० सजिल्द २०-००

७२. **दशपादी-उणादि-वृत्ति-संग्रह प्रथम भाग** में अति प्राचीन माणिक्य देव विरचित वृत्ति है । इस पर व्याकरणादि शास्त्रों से सम्बद्ध शतशः टिप्पणियां तथा अन्त में सूत्र प्रत्यय तथा शब्दसूची दी है । सम्पादक—युधिष्ठिर मीमांसक, चन्द्रदत्त शर्मा । मूल्य ४०-००

द्वितीय भाग में दो अज्ञातनामा वृत्तिकारों की वृत्तियां तथा विट्ठलाचार्य कृत वृत्ति दी गई है । सम्पादक—चन्द्रदत्त शर्मा । मूल्य ४०-००

७३. **दैवम् पुरुषकारवार्त्तिकोपेतम्** लीलाशुकमुनि कृत । इस में पाणिनीय धातुपाठ में जो धातु अनेक गणों में पढ़ी गई हैं, उन पर विचार किया गया है । १२-००

७४. **लिट् और लुङ् लकार की रूप-बोधक सरलविधि**— ४-००

७५. **भागवृत्तिसंकलनम्**—अष्टाध्यायी की प्राचीन अनुपलब्धवृत्ति के ग्रन्थान्तरों में उद्धृत २०० उद्धरणों का संकलन किया गया है । काशिका के अनन्तर यही वृत्ति प्रामाणिक मानी गई है । ८-००

७६. **काशकृत्स्न-धातु-व्याख्यानम्**—पाणिनि से प्राचीन धातुपाठ की चन्नवीरकृत कन्नड टीका का संस्कृत रूपान्तर । युधिष्ठिर मीमांसक २०-००

७७. **काशकृत्स्न-व्याकरणम**—पाणिनि से प्राचीन काशकृत्स्न व्याकरण के उपलब्ध १४३ सूत्रों को संस्कृत में विस्तृत व्याख्या । व्याख्याता—युधिष्ठिर मीमांसक १०-००

७८. **वाक्यपदीयम्**—भर्तृहरिकृत स्वोपज्ञ व्याख्या तथा वृषभदेव कृत संक्षिप्त विवरण सहित । सम्पादक—श्री पं० चारुदेव शास्त्री एम० ए० । प्रथम भाग—ब्रह्मकाण्ड अप्राप्य । द्वितीय भाग स्वोपज्ञ व्याख्या तथा पुण्यराज कृत व्याख्या सहित । संपादक—श्री पं० चारुदेव शास्त्री । अप्राप्य

७९. **शब्दरूपावली**—विना रटे शब्दरूपों का ज्ञान कराने वाली ३-५०

८०. **गणरत्नावली**—(संस्कृत) यज्ञेश्वरभट्ट कृत पाणिनीय गणपाठ की व्याख्या । **छप रही है ।**

८१. **संस्कृत धातुकोश**—पाणिनीय धातुओं का हिन्दी में अर्थ निर्देश । सं०—युधिष्ठिर मीमांसक । १२-००

८२. अष्टाध्यायीशुक्लयजुःप्रातिशाख्ययोर्मतविमर्शः—डा० विजयपाल विरचित पी० एच० डी० का महत्त्वपूर्ण शोध-प्रबन्ध (संस्कृत)। सुन्दर छपाई, उत्तम कागज, बढ़िया जिल्द सहित। मूल्य ५०-००

८३. महेश्वर-प्राप्त अष्टाध्यायी सूत्र-क्रम—ले० जगदीशाचार्य। १०-००

८४. सूर्य-सिद्धान्त—हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याता—श्री उदय-नारायणसिंह। इसके आरम्भ में १४६ पृष्ठ की अति विस्तृत एवं विविध विषय परिपूर्ण महत्त्वपूर्ण भूमिका छपी है। मूल्य ५०-००

८५. पिङ्गलनागछन्दोविचिति-भाष्यम् - यादवप्रकाश विरचित भाष्य। इस की प्रमुख विशेषता है कि इसमें छन्दों के जो उदाहरण दिये हैं वे अश्लीलता के दोष से रहित हैं। अतः गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों के लिये यह परम उपयोगी है। मूल्य ४०-००

अध्यात्म-विषयक ग्रन्थ

८६. ईश-केन-कठ-उपनिषद् श्री वैद्य रामगोपाल शास्त्री कृत हिन्दी अंग्रेजी व्याख्या सहित। मूल्य ईशो० २-००; केनो० २-००; कठो० ४-००

८७. तत्त्वमसि अथवा **अद्वैत मीमांसा** लेखक - श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती। ईश्वर जीव और प्रकृति रूप तीनों मूल तत्त्वों का प्रतिपादन करने वाला दार्शनिक ग्रन्थ। मूल्य ४०-००

८८. ध्यानयोग-प्रकाश—स्वामी दयानन्द सरस्वती के योगविद्या के शिष्य स्वामी लक्ष्मणानन्द कृत। बढ़िया पक्की जिल्द मूल्य १६-००

८९. अनासक्तियोग—लेखक पं० जगन्नाथ पथिक। ३५-००

९०. आर्याभिविनय(हिन्दी)—स्वामी दयानन्द। गुटका सजिल्द ४-५०

९१. Aryabhivinaya –English translation and notes (स्वामी भूमानन्द) दोरङ्गी छपाई। सजिल्द १०-००

९२. वैदिक ईश्वरोपासना (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से संकलित) १-५०

९३. विष्णुसहस्रनाम-स्तोत्रम्—(**सत्यभाष्य-सहितम्**) पं० सत्यदेव वासिष्ठ कृत आध्यात्मिक वैदिक भाष्य (चार भागों में)प्रति भाग २०-०० प्रथम भाग का संशोधित नया संस्करण मूल्य ५०-००

९४. श्रीमद्भगवद्-गीता-भाष्यम्—पं० तुलसीराम स्वामी ८-००

९५. हंसगीता—महाभारत का एक आध्यात्मिक प्रसंग। अप्राप्य

९६. अगम्यपन्थ के यात्री को आत्मदर्शन—चंचल बहिन ८-००

९७. **आत्मा की जीवनगाथा**—श्री कर्मनारायण कपूर। अप्राप्य

९८. **मानवता की ओर**—श्री शान्तिस्वरूप कपूर के विविध विचारोत्तेजक सरल भाषा में लिखे गये लेखों का संग्रह। ५-००

नीतिशास्त्र-इतिहास-विषयक ग्रन्थ

९९. **वाल्मीकि रामायण**—श्री पं० अखिलानन्द जी कृत हिन्दी अनुवाद सहित। अजिल्द २०-००, सुन्दर काण्ड २५-०० युद्धकाण्ड १२-००

१००. **शुक्रनीतिसार**—भारतीय राजनीति का परम प्रामाणिक ग्रन्थ। व्याख्याकार श्री स्वा० जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती। विस्तृत विषय-सूची तथा श्लोक-सूची सहित। उत्तम कागज, सुन्दर छपाई तथा जिल्द सहित। मूल्य ५०-००

१०१. **विदुरनीति**—इस में राजनीति और धर्मनीति दोनों का अद्भुत समन्वय है। पं० युधिष्ठिर मीमांसक कृत प्रतिपद पदार्थ और व्याख्या सहित। बढ़िया कागज, पक्की सुन्दर जिल्द। मूल्य ४०-००

१०२. **सत्याग्रह-नीति-काव्य**—आ० स० सत्याग्रह १९३९ ई० हैदराबाद जेल में पं० सत्यदेव वासिष्ठ द्वारा विरचित, हिन्दी व्याख्या सहित ३०-००

१०३. **ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास**—इस में ऋ० द० के सभी ग्रन्थों का विशद इतिहास दिया है। परिशिष्ट में पाण्डुलिपियों तथा अमुद्रित ग्रन्थों का विस्तृत विवरण दिया है। नया संशोधित संस्करण लेखक—युधिष्ठिर मीमांसक मूल्य ४०-००

१०४. **विरजानन्दप्रकाश**—लेखक—पं० भीमसेन शास्त्री एम० ए०। नया परिवर्धित और शुद्ध संस्करण। मूल्य ४-००

१०५. **ऋषि दयानन्द सरस्वती का स्वलिखित और स्वकथित आत्मचरित**—सम्पादक पं० भगवद्दत्त। मूल्य २-५०

१०६. **ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की संस्कृत-साहित्य को देन**—लेखक—डॉ० भवानीलाल भारतीय एम० ए०। सजिल्द २५-००

दर्शन-आयुर्वेद-विषयक ग्रन्थ

१०७. **मीमांसा-शाबर-भाष्य**—आर्षमतविमर्शिनी हिन्दी व्याख्या सहित प्रथम भाग के आरम्भ में शास्त्रावतार-वेदश्रुति-आम्नाय संज्ञामीमांसा तथा

श्रौतयज्ञमीमांसा नामक तीन निबन्ध । व्याख्याकार—युधिष्ठिर मीमांसक प्रथम भाग ६०-००; द्वियीय ४०-००; तृतीय ५०-००; चौथा ४०-००; पांचवां ५०-००; छठा यन्त्रस्थ ।

१०८. **मीमांसा-दर्शनम्**—शावरभाष्य-सहितम् । अन्तेऽनेकपरिशिष्ट-समन्वितम् । विविधाभिः टिप्पणीभिः समलङ्कृतम्, शास्त्रावतार-वेदश्रुति-आम्नायसंज्ञामीमांसा-श्रौतयज्ञमीमांसासंज्ञकनिबन्धसहितम् । प्रथम भाग मूल्य ६०-००

१०९. **प्रपञ्चहृदय-प्रस्थानभेदौ**—(संस्कृत) प्रथम अनिर्ज्ञातकर्तृक 'प्रपञ्चहृदय' में वैदिक वाङ्मय का संक्षिप्त सारगर्भित परिचय, द्वितीय मधुसूदन सरस्वती कृत 'प्रस्थानभेद' में ६ दर्शनों का संक्षेप से परिचय दिया है । मूल्य २०-००

११०. **नाडी-तत्त्वदर्शनम्**—पं० सत्यदेव जी वासिष्ठ । मूल्य ३५-००

१११. **चिकित्सा आलोक**—श्री कृष्णदेव चैतन्य पाराशर । मूल्य १५-००

११२. **षट्-कर्मशास्त्रम्**—(संस्कृत) जगदीशाचार्य । अजिल्द १०-००

११३. **परमाणु-दर्शनम्**—(संस्कृत) जगदीशाचार्य । अजिल्द १०-००

प्रकीर्ण ग्रन्थ

११४. **सत्यार्थप्रकाश**—(आर्यसमाज-शताब्दी-संस्करण) १३ परिशिष्ट, ३५०० टिप्पणियां तथा सन् १८७५ के प्रथम संस्करण के विशिष्ट उद्धरणों सहित । राज संस्करण ४०-००; साधारण संस्करण ३५-०० ।

११५. **दयानन्दीय लघुग्रन्थ-संग्रह**—१४ ग्रन्थ, सटिप्पण, अनेक परिशिष्टों के सहित । मूल्य ४०-००

११६. **संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास**—इस में पाणिनि से प्राचीन २३ वैयाकरणों, पाणिन तथा पाणिनि से उत्तरवर्ती १८ वैयाकरणों, उन पर टीका टिप्पणी लिखने वाले १०० से अधिक व्याख्याताओं का इतिहास लिखा गया है । तत्पश्चात् सभी व्याकरणों के धातुपाठ, उणादिसूत्र, लिङ्गानुशासन, परिभाषापाठ आदि के प्रवक्ताओं व्याख्याताओं, व्याकरण के दार्शनिक, तथा काव्यप्रणेता वैयाकरणों का इतिवृत्त दिया है । ले० युधिष्ठिर मीमांसक । नया परिष्कृत परिवर्धित संस्करण । तीन भागों का मूल्य १२५-००

११७. **ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन**—इस बार इस में ऋषि दयानन्द के अनेक नये उपलब्ध पत्र और विज्ञापन संगृहीत किये गये हैं। इस बार यह संग्रह चार भागों में छपा है। प्रथम दो भाग में ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन आदि संगृहीत हैं। तीसरे और चौथे भाग में विविध व्यक्तियों द्वारा ऋ० द० को भेजे गये पत्रों का संग्रह है।

प्रत्येक भाग का मूल्य ३५-००

११८. **भागवत-खण्डनम्**—ऋ० द० की प्रथम कृति। अनुवादक—युधिष्ठिर मीमांसक मूल्य ४-००

११९. **ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन**—इस में पौराणिक विद्वानों तथा ईसाई मुसलमानों के साथ हुए ऋ० द० के शास्त्रार्थ तथा पूना में सन् १८७५ तथा बम्बई में सन् १८८२ में दिये गये व्याख्यानों का संग्रह है। उत्तम कागज, कपड़े की जिल्द। मूल्य ३५-००

१२०. **दयानन्द-शास्त्रार्थ-संग्रह**—सस्ता संस्करण। मूल्य १२-००

१२१. **दयानन्द-प्रवचन-संग्रह**—(पूना-बम्बई प्रवचन) १२-००

१२२. **व्यवहारभानु**—ऋषि दयानन्द कृत। ३-००

१२३. **आर्योद्देश्यरत्नमाला**—ऋ० द० कृत। ०-६०

१२४. **अष्टोत्तरशतनाममालिका**—सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास की सुन्दर प्रामाणिक विस्तृत व्याख्या। लेखक—पं० विद्यासागर शास्त्री।

मूल्य २५-००

१२५. **कन्योपनयन-विधि**—अर्थात् 'कन्योपनयन-प्रतिषेध' ग्रन्थ का खण्डन। श्री पं० महाराणीशंकर। अपने विषय की सुन्दर सामयिक पुस्तक।

मूल्य ४-००, सजिल्द ६-००

१२६. **संस्कृत-वाक्य-प्रबोध** - मूल ऋषि दयानन्द कृत। मूल्य ४-००

१२७. „ „ „ (आक्षेपों के उत्तर सहित) मूल्य ८-००

१२८. **जगद्गुरु दयानन्द का संसार पर जादू**—श्री मेहता जैमिनि बी० ए० (एम० विज्ञानानन्द सरस्वती)। ५८ वर्ष पश्चात् यह उपयोगी पुस्तक पुनः छापी गई है। मूल्य १-००

१२९. **प्यारा ऋषि**—श्री आनन्द स्वामी। ऋषि के जीवन की प्रेरणा-पद घटनाएं। अप्राप्य

१३०. **आर्य-मन्तव्य-प्रकाश**—महामहोपाध्याय पं० आर्यमुनि। प्रथम भाग अप्राप्य, द्वितीय भाग ६-००।

१३१. **आर्यसमाज के दिग्गज विद्वानों का शास्त्रार्थ**—यह शास्त्रार्थ 'वेद में इतिहास है वा नहीं' विषय पर लाहौर में सन् १९३३ में म० हंसराज जी के सभापतित्व में हुआ था। अप्राप्य

१३२. Vegetarianism V/S Meat Eating—कर्मनारायण कपूर अप्राप्य

१३३. **भारतीय प्राचीन राजनीति**—श्री पं० भगवद्दत्त जी। २-५०

१३४. **आर्यसमाज के वेद-सेवक विद्वान्** लेखक—डा० भवानीलाल भारतीय। अप्राप्य

१३५. **अमीर सुधा**—भक्त अमीचन्द कृत। अप्राप्य

१३६. **ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बद्ध कतिपय महत्त्वपूर्ण अभिलेख**—इस में ऋ० द० के नये उपलब्ध पत्र, बम्बई आर्यसमाज के आदिम २८ नियमों की ऋ० द० कृत व्याख्या पं० गोपालराव हरि देशमुख लिखित दयानन्द चरित्र मराठी का हिन्दी रूपान्तर, आर्यसमाज काकड़-बाड़ी बम्बई की पुरानी गुजराती में लिखित कार्यवाही (सन् १८८२ में जब ऋ० द० बम्बई में थे) का हिन्दी रूपान्तर आदि। मूल्य १०-००

१३७. **दयानन्द अंक (१)** वेदवाणी का सं० २०४० का विशेषाङ्क—इस में ऋषि दयानन्द के जीवन से सम्बद्ध अभी तक अज्ञात और हिन्दी में अप्रकाशित घटनाओं तथा ऋ० द० की यात्रा का विवरण तिथि संवत् तारीख वार सन् सहित परिष्कृत एवं संशोधित रूप में छापा है। अन्त में ऋ० द० के अन्तिम विशेष कार्य-काल के १० वर्षों (सन् १८७५ से १८८३ तक तारीख मास दिन का देशी तारीख मास और संवत् का तुलनात्मक पत्र छापा गया है। इससे जीवनचरितों एवं पत्रों में निर्दिष्ट इन वर्षों की अनेक तिथि तारीख और वार की भूलों का परिमार्जन होता है। मूल्य १२-००

१३८. **दयानन्द अंक**—(२)वेदवाणी का संवत् २०४१ का विशेषाङ्क—इसमें ऋषि दयानन्द के नूतन उपलब्ध पत्र, पत्रांश जो पहले नहीं छपे थे तथा एक जाली पत्र और उसकी विवेचना, ऋ० द० के जीवन से सम्बद्ध

अज्ञात वा अप्रकाशित घटनाएं, ऋषि दयानन्द के सहयोगी महाराष्ट्रिय विशिष्ट व्यक्तियों का मराठी से अनूदित परिचय आदि अनेक विषयों का सन्निवेश किया गया है। मूल्य १२-००

१३९. दयानन्द अंक (३) वेदवाणी संवत् २०४२ का विशेषाङ्क—इस में टंकारा निवासी प्रा० श्री दयालभाई ने ऋ० द० के प्रारम्भिक जीवन के सम्वन्ध में अनेक वर्षों के अनुसन्धान के पश्चात् प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया है। और पुरानी अनेक भूलों का निराकरण किया है। डा० श्री भवानीलाल भारतीय द्वारा ऋ० द० के सम्वन्ध में थियोसोफिकल सोसाइटी की थियोसोफिस्ट पत्रिका में जो-जो वृत्तान्त उपलब्ध हुआ है उस सब का हिन्दी भाषा में अनूदित विवरण प्रथम वार हिन्दी में छापा गया है। मूल्य १२-००

१४०. दयानन्द अंक (४)—वेदवाणी सं० २०४३ का विशेषाङ्क। इस में कुछ नये उपलब्ध पत्र और ऋषि दयानन्द के जीवन से सम्वद्ध महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन है। मूल्य १२-००

१४१. दयानन्द अंक (५) वेदवाणी सं० २०४४ का विशेषाङ्क। इस में ऋ० द० के उपलब्ध ४० पत्र तथा अनेक पूर्व अज्ञात तथ्यों का संग्रह किया है। मूल्य १२-००

विशेष—१३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, के ६ अङ्क ऋषि दयानन्द के जीवनचरित्र पर कार्य करने वाले भावी विद्वानों के लिये बड़े उपयोगी हैं। ये वहुत सीमित संख्या में छपवाये गये हैं।

१४२. ऋषि दयानन्द की पद-प्रयोग शैली—लेखक-यु०मी०। इस में ऋ० द० के यजुर्वेदभाष्य में प्रयुक्त कतिपय ऐसे शब्द, जिन्हें आधुनिक वैयाकरण अशुद्ध मानते हैं, पर पाणिनीय दृष्टि से विचार किया है। मूल्य ५-००

१४३. पाथेयम्—(संस्कृत) लेखक जगदीशाचार्य। ३०-००

१४४. अभूतपूर्वानुसन्धानत्रयी—,, ,, ,, २५-००

१४५. विश्वदर्शन—,, ,, ,, १०-००

१४६. सन्मार्गसिद्धान्तदर्शनम्—,, ,, ,, ३०-००

नये प्रकाशन

१. **महाभाष्य हिन्दी व्याख्या** (भाग २) का नया संशोधित संस्करण। मूल्य ५०-००

२. **आत्म-परिचय** (वंश-परिचय एवं पूर्वज-परिचय सहित)। इसमें मीमांसक जी ने अपने पूर्वज, विशेष करके पिता गौरीलाल आचार्य के वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में किये गये उन कार्यों का उल्लेख किया है जिन के कारण इन्दौर राज्य उन्हें परेशान करता रहा। अन्त में स्व-परिचय दिया है। पुस्तकें केवल ३०० छपी हैं। बढ़िया सुन्दर जिल्द वाली पौने पांच सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ३०-००।

३. **पुरुषार्थप्रकाश** – लेखक श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी और ब्र० नित्यानन्द जी महाराज। ब्रह्मचर्य और गृहस्थधर्म सम्बन्धी ५० वर्षों से अप्राप्य पुस्तक। 25/ यन्त्रस्थ

४. **वैदिक-निघण्टु-संग्रह** — इसमें कौत्सव्य और यास्कीय निघण्टु के साथ भास्करराय विरचित **वैदिक कोश**, वेङ्कटमाधवकृत आख्यातानुक्रमणी और नामानुक्रमणी हैं। सम्पादक – ब्र० धर्मवीर विद्यावारिधि।

वेदवाणी (मासिक) पत्रिका

४० वर्षों से विना नागा नियत समय प्रकाशित होने वाली वेदादि विशिष्ट विषयों की एक मात्र प्रामाणिक पत्रिका। प्रतिवर्ष किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर एक बृहद् विशेषांक दिया जाता है। वार्षिक चन्दा १५-०० रुपये मात्र। विदेश के लिये ५०-०० रुपया वार्षिक।

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट

बहालगढ़ जिला सोनीपत (हरयाणा) १३१०२१

रामलाल एण्ड संस, २५९६ नई सड़क, दिल्ली।